CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286
शोध-पत्र

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received 18.02.2023 Reviewed 26.02.2023 Accepted 19.03.2023

तैमूर का भारत आक्रमण

* डॉ. दिग्विजय यादव

मुख्य शब्द - *योग, मानसिक स्वास्थ्य, माध्यमिक स्तर आदि.*

सारांश

तैमूर का 1398 ई. में भारत पर आक्रमण, चौदहवीं शती के अंत की महत्वपूर्ण घटना थी, ये आक्रमण जहाँ एक ओर दरकती दिल्ली सल्तनत की कमजोरियों को उजागर करती है, वहीं दूसरी ओर यह भी प्रदर्शित करती है कि जब भी मध्य एशिया की बदलती भू–सामरिक, भू–राजनीतिक व्यवस्था की ओर भारतीय शासक वर्ग की उदासिनता, बाह्य आक्रमण को आमंत्रित करती थी।

एक मंगोल के रूप में तैमूर युद्ध पद्धति में प्रत्यक्षतः चंगेज खां का अनुसरण करता था, वह न केवल मंगोलों की 'स्कार्च द अर्थ' अर्थात् शहर व नगरों को जला देने, मासूम व्यक्तियों को निर्ममता पूर्वक मृत्यु के घाट उतारने की परम्परागत मंगोल भयोत्पादक मनोवैज्ञानिक सैन्य रणनीति पर अमल करता था"[प], अपितु कई मायनों में सभी मंगोल शासकों में सबसे निर्दमतम, क्रूर शासक था, जिसके द्वारा उन भंयकर नरसंहारों को अमल में लाया गया, जो इतिहास में उसे पहले कभी दर्ज नहीं थे जहाँ तक तैमूर के भारत आक्रमण के कारण का सन्दर्भ है, जफरनामा में 'अली यन्दी' इसका उद्देश्य इस्लाम का प्रचार–प्रसार तथा काफिरस्तान को दण्डित करना था।"[पप] लेकिन सतीश चन्द्र उसका मुख्य कारण भारतीय धनसंपदा को लूटना तथा सल्तनत के लगातार बिगड़ते अंदरूनी हालत थे।"[पपप] जार्ज डनबर भी इन हालातों की ओर इशारा करते हुऐ लिखते है" फिरोज तुगलक की 1388 ई. में मृत्यु उपरांत अगले 10 वर्षों में एक के बाद पाँच सुल्तान गद्दी पर बैठें। लेकिन उन्होंने अपने कृत्यों से समाज तथा सेना को नीचा ही दिखाया" राज्य के हालत बाह्य आक्रमण को खुला नियंत्रण दे रहे थे।

आक्रमण की तैयारी एवं चुनौतियाँ

तैमूर की राजधानी समरकंद में जब 1398 ई. में 90 हजार सैनिक दिल्ली अभियान के लिए एकत्र हुऐ थे, तो पूरा शहर ही धूल के गुबार से भर गया, दिल्ली समरकंद से दक्षिण–पूर्व में तीन हजार कि.मी. की दूरी पर विद्यमान थी। यह सैन्य अभियान, दुनियाँ की सबसे गहरी पर्वत घाटियों को पार करने वाला था, वही दूसरी ओर हिंदूकुश पर्वत की सदा बर्फ से लदी चोंटियाँ उनके रास्ते में भारी बाधाएँ उपस्थित करने वाली थी, जिनकी ऊँचाई 25000 फुट से भी अधिक थी।[पअ]

यदि इन नदियों तथा रेगिस्तानों को पार पा भी लिया जाता तो "तैमूर के सैनिकों ने भारत के बखतरबंद हाथियों के युद्ध कौशल के बारे में काफी सुन रखा था, जिनसे की उसका सामना पहले कभी नहीं हुआ, जैसे वो अपने रास्ते में आने वाली हर बाधा को उखाड़ फैकते है चाहे वह पेड़ हो या दीवार।"[अ]

मार्च, 1398 में अपने अभियान को आरम्भ गर्मियों में तैमूर ऑक्सस नहीं को पार कर अफगानिस्तान में प्रवेश करता हैं, यहीं से हिंदूकुश की अत्यन्त कठिन चढ़ाई आरम्भ होती है सैकड़ों घोड़े और सैनिक पथरीली तथा बर्फ से लदी घाटियों में फिसलकर जाने के देते है और एक समय ऐसा आता है कि तैमूर एक साधारण सैनिक की तरह घोड़े की पीठ से उतरकर चलता है"[अप] अगस्त तक आते–आते तैमूर काबुल पहुँच जाता है, जहाँ का शासक तैमूर के सामने नतमस्तक होते हुऐ बहुमूल्य उपहार प्रदान करता है।

सितम्बर तक आते–आते तैमूर सिंधु नदी के तट पर पहुँच जाता है, जिसे पार करने के लिए विशाल पुल बनाया जाता है, आगे तैमूर इसी प्रकार झेलम, चिनाब तथा रावी जैसी प्राकृतिक बाधाओं को भी पार कर लेता है।

अक्टूबर 1398 ई. तैमूर सतलज के तट पर पहुँच कर मुल्तान का घेरा डालता है, जिसकी रक्षा का भार पीर मुहम्मद पर था। लगातार छः महिने की घेराबंदी के कारण शहर के हालात बदतर हो जाते है यज्दी लिखता है, पीर मुहम्मद के ज्यादातर घोड़े बीमारी का शिकार को गये तथा उसके सैनिकों की स्थिति खराब थी"[अपप] परिस्थिति को समझते हुए पीर मुहम्मद तैमूर के समक्ष आत्मसमर्पण कर देता है, तैमूर उसे माफ करते हुए, तीन हजार तरो–ताजा घोड़े और दहिने हाथ की कमान प्रदान करता है।

पंजाब में आगे बढते हुए तैमूर भारी कत्लेआम मचाता है, वह शहरों तथा गाँवों को जलाता हुआ आगे बढ़ता है, भटनेर में, जहाँ दीपालपुर तथा पाक्पाटन से जान बचाकर भागे शारणार्थी किले की दीवार के नीचे इक्ट्ठा हो जाते है, लेकिन तैमूर के सैनिक उन सभी को निर्दयता से कत्ल कर देते है, यही हाल भटनेर दुर्ग का भी होता है। दिसम्बर में तैमूर दिल्ली पहुँच जाता है, तथा दिल्ली के उत्तर में स्थित लोनी में अपना सैन्य पड़ाव डालता है, तथा इस उठे हुए स्थान से जमुना नदी तक दिल्ली की भू–सामरिक अवस्था का पूरा जायजा लेता हैं। दिल्ली की स्मृद्धि का वर्णन करते हुए तैमूर लिखता है, "कि दिल्ली एक महान शहर है, यहाँ के लोग विभिन्न कलाओं में निपुण है, यह व्यापारियों का घर, तथा बहुमूल्य धातुओं की खान है"[अपपप] दिल्ली सल्तनत अपने सबसे कमजोर दौर से गुजर रही थी, इसके बावजूद इसकी दीवारों के भीतर 10 हजार घुड़सवार बीस हजार से चालीस हजार पैदल सैनिक तथा 120 हाथी युद्ध हेतु तैयार थे।

तैमूर की सेना का दिल्ली की सेना से प्रथम सामना, एक हल्की झड़प के रूप में होता है, जब तैमूर के 700 घुड़सवारों की एक टोली का सामना मल्लू खां के सैनिकों से होता हैं, जो इस दौर में सुल्तान नसीरूद्दीन महमूद की ओर से दिल्ली की रक्षा के लिए उत्तरदायी था, इस झड़प के दो महत्वपूर्ण परिणाम हुऐ, प्रथम उसने भटनेर के विरुद्ध दिल्ली पर त्वरित हमला तथा कब्जा करने का निर्णय लिया। द्वितीय तैमूर को यह डर सताने लगा कि उसके बनाए गए 1 लाख बंदी हमले की अवस्था में दिल्ली की ओर से विद्रोह कर सकते है, तो उसके द्वारा इन सभी के कत्लेआम का आदेश दिया गया, इतिहास में इससे पूर्व किसी शासक ने इतना निर्दयीतम फैसला नहीं लिया था। कोई भी सैनिक किसी निहत्थे, बैकसूर बंदी स्त्री, पुरुष की हत्या करने से पीछे न हठे, इसके लिए मुल्ला–मौलवियों को भी उनका उत्साहवर्धन करने के लिए किया गया। इस बेहिसाब कत्लेआम से खून की नदियाँ बह उठीं।

इधर युद्ध आरम्भ होते है, दिल्ली सल्तनत के बखतरबंद हाथी तैमूर की सेना में अफरा–तफरी उत्पन्न करने लगे, जो "तैमूर ने यह देखा तो उसने उन ऊँटों को आगे कर दिया जिनके होदों में घास तथा भुस के गट्ठर रखकर आग लगा दी गई। इस अप्रत्याक्षित हमला को देखकर हाथियों में हलचल फैल गयी तथा वह अपनी ही सेना को कुचलने लगे"[पग] इनके बाद तैमूर के विजय रथ हाथ लगना बस समय की बात थी, मल्लू खां, अपने सैनिकों के साथ सुल्तान महमूद को लेकर दिल्ली छोड़ भाग निकला तथा दिल्ली अब पूरी तरह तैमूर के रहमो–करम पर थी।

तैमूर की दिल्ली प्रवेश के बाद ततार सैनिकों ने जान के बदले सोना, चाँदी बहुमूल्य वस्तुओं की माँग करनी आरम्भ कर उनके निरन्तर बढ़ते अत्याचार के विरुद्ध दिल्ली की जनता ने विरोध करने का प्रयास, लेकिन उसके बाद तैमूर की सेना ने दिल्ली की जनता पर जो अत्याचार किए, वैसा न पहले कभी न बाद में हुआ, समूचा शहर लाशों से भर गया, जगह–जगह कटे सिरों की मीनारें लगा दी गई। तैमूर मात्र 15 दिन ही दिल्ली में पड़ाव किया, और दिल्ली को खण्डर में बदल दिया। "दिल्ली के सुल्तानों ने पिछली दो शताब्दियों में जो अकूत सम्पदा से दिल्ली को ंसवरा था, वह तैमूर के कुछ दिनों के पड़ाव भी ही गायब हो गयी, अनाज के गोदाम तथा खड़ी हुई फसलों को नष्ट कर दिया गया, अकाल तथा भुखमरी, महामारी व्याप्त हो गई, सड़ती हुई लाशों से वायु तथा जल प्रदूषित हो गए, अगले दो महिनों तक पक्षियों ने भी दिल्ली की ओर रूख नहीं किया, पहले से खस्ता हल दिल्ली सल्तनत अब डहने के कागार पर जा पहुँचा।"[ग]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

i निकोल, डेविड, दी मंगोल वारलार्ड्स, पृ. 155

ii यज्दी, अली, जफरनामा, पृ. 168

iii चन्द्र, सतीश, हिस्ट्री ऑफ मिडाइवल इण्डिया, पृ. 117

iv डनवर, जार्ज, हिस्ट्री ऑफ इण्डिया फ्रॉम दी अलीएस्ट आइम्स टाइम्स टू दी प्रिजेन्ट डे, पृ. 67

v तैमूर, मलफूजात तैमूरी, पृ. 182

vi यज्दी, अली, जफरनामा, पृ. 172

vii वही, जफरनामा, पृ. 178

viii तैमूर, मलफूजात तैमूरी, पृ. 189

ix मरोजी, जस्टिन, तैमूरलेन, सोर्ड ऑफ इस्लाम, कॉनकर ऑफ दी वर्ल्ड, पृ. 204

x वही, पृ. 209

Corresponding Author

***डॉ.दिग्विजय यादव**

सहायक आचार्य इतिहास

बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय, अलवर

Email-digvijayyadav1900@gmail.com, Mobile-8233302525